विशेष

9
सारंगी
हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक (कक्षा 1)

प्रिय शिक्षक साथियो,

आप जानते हैं कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक केवल एक उपकरण और माध्यम है जो बच्चों में उन अनंत क्षमताओं को विकसित करने में सहायक है जिनके बीज उनमें पहले से ही हैं। आप सभी से यह आग्रह है कि पाठ्यपुस्तक का उपयोग करते हुए और स्वतंत्र रूप से भी बच्चों को कक्षा-कक्ष के इर्द-गिर्द फैली अनंत प्रकृति से अवगत कराएँ; उन्हें स्वयं खोजबीन करके सीखने के लिए प्रोत्साहित करें; उन्हें अपनी बात कहने के अवसर दें; सही-गलत का फैसला न लेते हुए बच्चों के साथ एक संवाद में शामिल हों।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, भाषा राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने और न्यायप्रिय समाज को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस नीति में बच्चों की शिक्षा में भाषा और साक्षरता के विकास को बहुत महत्व दिया गया है। यह माना जाता है कि भाषा और साक्षरता की ठोस नींव बच्चों के लिए अन्य विषयों को सीखने में बहुत सहायक होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बुनियादी स्तर (फाउंडेशनल स्टेज) पर बच्चों में भाषा के विकास के साथ-साथ सतत सीखने की कला, समस्या-समाधान, तार्किक और रचनात्मक सोच के विकास पर भी बहुत बल दिया गया है। इस स्तर पर भाषा के साथ-साथ अन्य विषयों और गतिविधियों में भारतीय परंपरा, सांस्कृतिक मूल्य, चरित्र निर्माण, नैतिकता, करुणा और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को समेकित रूप में सम्मिलित करने की भी अनुशंसा की गई है।

कक्षा 1 की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक *सारंगी* का सृजन करते समय निम्न बातों का ध्यान रखा गया है—

1. पढ़ने-लिखने की शुरुआत के लिए बच्चों के जीवन से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है जिससे यह प्रक्रिया सहज और अर्थपूर्ण हो।
2. भाषा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जो हमें संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने आदि में सहायक है। रोचक बात यह भी है कि विभिन्न कार्यों के लिए जितना ज़्यादा भाषा का प्रयोग होता है, उतनी ही तेज़ी से हमारी भाषा का विकास भी होता है। अत: इस पुस्तक में अपनी भाषा में बातचीत करने, सुनकर कुछ करने, कहानी और कविताओं का आनंद लेने, ध्वनि और शब्दों की पहचान के साथ खेलने, कला एवं

संगीत से जुड़ी गतिविधियों में भाग लेने के अनेक अवसर दिए गए हैं। ये अवसर अलग-अलग संदर्भों में दिए गए हैं और बार-बार दिए गए हैं।

3. इस पुस्तक में पाँच ऐसे संदर्भों को चुना गया है जो बच्चों के जीवन से जुड़े हैं— परिवार, जीव-जगत, हमारा खान-पान, त्योहार और मेले तथा हरी-भरी दुनिया।
4. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कक्षा में बच्चों के संदर्भ की वस्तुओं/घटनाओं/व्यक्तियों के साथ इस पुस्तक में दी गई पठन सामग्री को जोड़ा जाए। इस हेतु सुझाव भी दिए गए हैं।
5. हर पाठ में लगभग सारी दक्षताओं का ध्यान रखा गया है। बच्चों के दृष्टिकोण से पाठों को रोचक बनाने के लिए कार्यों में विविधता लाने का प्रयास किया गया है।

पाठ्यचर्या लक्ष्य

बुनियादी स्तर (फाउंडेशनल स्टेज) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2022) में भाषा के संदर्भ में निम्नलिखित पाठ्यचर्या लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं—

- CG-9 बच्चे दैनिक जीवन के लिए प्रभावी संप्रेषण की कुशलता विकसित करते हैं।
- CG-10 बच्चे पहली भाषा (L1) में पढ़ने और लिखने में निपुणता विकसित करते हैं।

इस रूपरेखा के अनुसार भाषा सीखने-सिखाने के लिए भाषा-शिक्षण के चारों स्तंभों पर कार्य करना महत्वपूर्ण है। ये चार स्तंभ हैं— मौखिक भाषा का विकास, शब्द पहचान, पढ़ना और लिखना।

- **मौखिक भाषा का विकास**— बेहतर ढंग से सुनकर समझना, मौखिक शब्दावली का विकास और साथियों व अन्य जानकार लोगों (जैसे—बड़े विद्यार्थी, शिक्षक, माता-पिता) के साथ बातचीत और चर्चा का उपयोग सीखने के लिए करना।
- **शब्द पहचान**— इसमें प्रिंट जागरूकता और ध्वनि जागरूकता, प्रतीकों और ध्वनि का संबंध, लिखित शब्द पहचानना और शब्दों को लिखना शामिल है।
- **पढ़ना**— लिखित सामग्री से अर्थ का निर्माण करना और इसके विषय में आलोचनात्मक/समीक्षात्मक ढंग से चिंतन करना।
- **लिखना**— तार्किक और व्यवस्थित तरीके से विचारों या सूचनाओं की प्रस्तुति के साथ-साथ शब्दों को सही ढंग से लिखने की क्षमता।

इस पुस्तक में हर विषय के इर्द-गिर्द चुनी पठन सामग्री में इन चार स्तंभों को निम्न प्रकार से बाँटा गया है—

मौखिक भाषा का विकास

पुस्तक में अलग-अलग भाग हैं, जैसे— 'चित्र और बातचीत', 'कविता', 'आओ कुछ बनाएँ', 'खेल-खेल में' और 'खोजें-जानें'। इन सभी का प्रमुख उद्देश्य बच्चों में मौखिक भाषा का विकास करना है। इसके साथ-साथ बच्चे मिलकर कुछ बनाते समय एक-दूसरे के विचारों को सुनेंगे, 'खोजें-जानें' क्रियाकलापों के दौरान अपने परिवार एवं समुदाय के लोगों के साथ बातचीत कर कुछ समझने का प्रयास करेंगे आदि। उदाहरण के लिए, 'गिलहरी की कहानी'

में चित्रों को देखकर कहानी बनाना और उसे अपनी भाषा में कहना/'अँगूठे की छाप' से अपनी पसंद के चित्र बनाना आदि।

शब्दों को पहचानना एवं गढ़ना

'शब्दों का खेल' कहानी और कविता के बाद दिया गया है। एक साथ पूरी वर्णमाला सीखने के बजाय कुछ वर्णों और मात्राओं से अवगत कराते हुए शब्द बनाने के कार्य दिए गए हैं, जैसे— 'आलू की सड़क' कहानी में 'ब' से शुरू होने वाले शब्दों को पहचानना और लिखना सिखाया गया है। 'झूलम-झूली' कविता में 'उ' और 'ऊ' ध्वनि की आकृति एवं उनकी मात्राओं की पहचान करना, शब्दों का दूसरा साथी खोजना, लिखना और पढ़कर सुनाना जैसे अभ्यास दिए गए हैं, जिसमें बच्चों से यह अपेक्षा की गई है कि वे छुप्पम, झूलम, पकड़म आदि शब्दों की समान लय वाले शब्द बनाएँगे। शब्दों के खेल में जो शब्द हैं, वे कविता या कहानी से लिए गए हैं। अन्य शब्द बच्चों के संदर्भ से ही लिए गए हैं और उनके भी चित्र दिए गए हैं, ताकि शब्दों का खेल सार्थकता से हो। आनंदमयी और सार्थक भाषा शिक्षा के लिए 'आओ बूझें पहेली' और 'झटपट कहिए' भी है। उदाहरण के लिए, 'अप्पू के अप्पा अप्पम लेने अनोखे अनंत नगर आए' आदि।

पढ़ना

'सुनें कहानी', 'मिलकर पढ़िए' और 'कविता' आदि भागों में बच्चों के लिए पढ़ने की विविध दक्षताओं को विकसित करने के अवसर हैं, जैसे मिलकर पढ़ते समय बच्चे शिक्षक के साथ मिलकर और बाद में अपने मित्रों के साथ मिलकर पढ़ेंगे। पढ़ते समय कहानी के चित्रों को देखकर अनुमान लगाना, फिर कहानी सुनकर बातचीत करना, शब्दों को चित्र रूप में समझना, कुछ प्रश्नों के उत्तर देना आदि से बच्चे 'पढ़ना माने अर्थ गढ़ना' संकल्पना को आत्मसात कर पाएँगे। उदाहरण के लिए, 'होली' कविता में समान लय वाले शब्द खोजने के लिए कहा गया है। इसी प्रकार 'रानी भी' कहानी में बातचीत के लिए ऐसे प्रश्न शामिल किए गए हैं कि "माँ ने रानी को स्कूल क्यों नहीं जाने दिया होगा?" ऐसे प्रश्न अनुमान लगाने में सहायता करेंगे।

लिखना

हम सभी जानते हैं कि लिखने की शुरुआत चित्रों से होती है और फिर चित्रों के साथ बच्चे शब्द और धीरे-धीरे वाक्य लिखना आरंभ करते हैं। यहाँ प्रयास किया गया है कि बच्चे अपने अनुभवों और विचारों को चित्रों के माध्यम से बताएँ और फिर उन पर कुछ शब्द शिक्षक की सहायता से लिखें। अन्य भाग जैसे 'कविता', 'सुनें कहानी' और 'मिलकर पढ़िए' आदि में भी लिखने के अवसर हैं। यहाँ लिपि को समझने और लिखने पर भी बल दिया गया है। उदाहरण के लिए, अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाकर लिखना, चित्रों को देखकर शब्द लिखना, दिए गए विषय पर अपनी बात कहना और लिखना। यह लेखन चित्र भी हो सकते हैं और वाक्य भी। इन सभी में शिक्षक की सहायता शामिल है।

बच्चों में इन सभी दक्षताओं के विकास के लिए यह आवश्यक है कि इन चारों स्तंभों पर नियमित रूप से कार्य हो। अत: इस पाठ्यपुस्तक में पाँच संदर्भों के इर्द-गिर्द पढ़ने, लिखने, शब्द पहचानने और बातचीत

के विविध आयामों को सम्मिलित किया गया है। आइए, इन आयामों के विषय में सविस्तार चर्चा करें।

सृजनशील शिक्षक दी गई पठन-पाठन सामग्री को अत्यंत रोचक और प्रभावी तरीके से बच्चों के साथ मिलकर रच सकते हैं। यहाँ बस कुछ सुझाव हैं। हमें आशा है कि आप अपनी कक्षा में विविधता लाएँगे, बच्चों के संदर्भ के आधार पर शब्दों का खेल, खेल गीत, कविताएँ और कहानियाँ शामिल करेंगे। विविध संसाधनों की सहायता से कक्षा को और भी रोचक बनाएँगे।

बातचीत

इस पुस्तक में लिए गए पाँचों संदर्भों में बातचीत की ढेर सारी संभावनाएँ हैं। उदाहरण के लिए, 'हमारा खान-पान' में आप बच्चों से निम्न प्रश्नों से बातचीत शुरू कर सकते हैं—

आगे आने वाले कुछ दिनों में हम 'हमारा खान-पान' के बारे में बातचीत करेंगे, पढ़ेंगे, लिखेंगे और समझेंगे। इसकी शुरुआत बातचीत से करेंगे। आपको खाने में सबसे ज़्यादा क्या पसंद है? क्या आपको पता है कि वह कैसे बनता है? पता कीजिए कि आपकी कक्षा में मीठा, नमकीन और तीखा कितने बच्चों को पसंद है? खाना खाने से जुड़ी कुछ अच्छी आदतें बताइए। चिड़िया, कौआ, बत्तख, मेंढक आदि को खाने में क्या पसंद होगा?

जैसे-जैसे बच्चों के उत्तर आएँगे, उस तरह से बातचीत को आगे बढ़ाया जा सकता है। बातचीत की यह गतिविधि हर दिन करवाई जा सकती है। एक दिन में सभी बच्चों को मौका नहीं मिल पाएगा, इसीलिए हर दिन यह गतिविधि कक्षा में करवाएँ। समय-सारणी में सर्कल टाइम के लिए जगह है। उस समय इस तरह की बातचीत को जगह दी जा सकती है।

'बातचीत' के अंतर्गत दी गई गतिविधियों का एक और महत्वपूर्ण पहलू है— बहुभाषिकता। अर्थपूर्ण सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में आवश्यक है कि बच्चे अपनी भाषा में खुलकर अपने विचार रख सकें। कक्षा-कक्ष की हर गतिविधि में इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है।

सुनें कहानी

इसके अंतर्गत दी गई कहानियों को शिक्षक बच्चों को एक से अधिक बार पढ़कर सुनाएँ।

कुछ तरीके इस प्रकार हो सकते हैं— कहानी पढ़कर सुनाने से पूर्व बच्चों से कहानी के चित्र देखकर कहानी गढ़ने को कहें। यह कार्य आप बच्चों के छोटे समूह बनाकर करवा सकते हैं। उदाहरण के लिए, 'मीना का परिवार' कहानी पढ़ते समय बीच में बच्चों से एक या दो प्रश्न पूछें, जैसे— 'आपको क्या लगता है कि कहानी में आगे क्या होगा?' आदि। कहानी के बाद दिए गए 'बातचीत के लिए' प्रश्नों पर बच्चों से बातचीत कीजिए। यहाँ कोई उत्तर सही या गलत नहीं है, बल्कि प्रयास यह रहे कि बच्चे अपने मन की बात या उन्हें जो समझ में आया, वह निःसंकोच कह सकें। ये कुछ सुझाव हैं, इनके अतिरिक्त भी आप विविध क्रियाकलाप करवा सकते हैं। उदाहरण के लिए, 'मिठाई' कहानी में बच्चों को कहानी में कुछ अन्य जानवरों को जोड़कर कहानी को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। बच्चे कहानी को अपनी भाषा में कक्षा या घर में सुना सकते हैं।

बातचीत के दौरान जो शब्द कहानी में और बातचीत में बार-बार आ रहे हैं, उन तीन से चार शब्दों को आप बोर्ड पर धीरे-धीरे लिखें। बच्चों से अनुमान लगाकर इन शब्दों की पहचान करने को भी कहा जा सकता है। जैसे-जैसे आगे बढ़ेंगे, बच्चे कुछ अन्य वर्ण और मात्राएँ पहचानना सीख जाएँगे। आप बच्चों को पिछले पाठों में आई कहानियों और कविताओं में से शब्दों को पहचानने का कार्य दें। इसी तरह की अन्य गतिविधियाँ भी करवाई जा सकती हैं।

मिलकर पढ़िए

इस हिस्से में उन कहानियों का चुनाव किया गया है, जिनमें दोहराव है। यह दोहराव वाक्यों के स्तर पर है। कहानी के कथानक में भी दोहराव है। आपने यह देखा होगा कि दोहराव में बच्चों को आनंद आता है। दोहराव से बच्चों को अनुमान लगाने में भी आसानी होती है। उदाहरण के लिए, 'भुट्टे' कहानी में 'नीना', 'नाना', 'नानी', 'भुट्टे' शब्दों में दोहराव है। इन कहानियों को पढ़ने से पूर्व चित्र दिखाकर बच्चों से बातचीत कीजिए। फिर उँगली रखते हुए बच्चों के साथ मिलकर कहानी पढ़िए। जिन शब्दों का दोहराव है, उन्हें बोर्ड पर लिख दीजिए। उनके चित्र बन पाएँ, तो अवश्य बनाइए। फिर, कहानी को पुन: पढ़िए और दूसरी बार पढ़ते समय दोहराव वाले वाक्यों पर बच्चों को अनुमान लगाने के लिए कहिए। कुछ दिनों बाद, छोटे समूह में बच्चों को मिलकर पढ़ने के लिए कहिए। उनका अवलोकन कीजिए। उन्हें जहाँ-जहाँ सहायता की आवश्यकता है, उन शब्दों को 'नोट' कर लीजिए। अगली कक्षा में इन शब्दों को आप 'शब्दों का खेल' में शामिल करके इन पर गतिविधियाँ करवा सकते हैं। इन सभी कार्यों का उद्देश्य यह है कि बच्चे दी गई पठन सामग्री को धीरे-धीरे पढ़ना सीख जाएँ। हमें याद रखना होगा कि हर बच्चे का सीखने का तरीका और गति अलग-अलग होती है। हम उन पर किसी भी प्रकार का दबाव बिल्कुल भी न डालें। हाँ, उन्हें सार्थक अवसर अवश्य दें और उनका उत्साहवर्धन करें। इस पुस्तक में 'मिलकर पढ़िए' में कई अवसर हैं। ऐसा इसीलिए, क्योंकि इन अवसरों से ही बच्चे पढ़ना सीखते हैं। आप भी पुस्तकालय से बच्चों को उनके स्तर के अनुरूप रोचक बाल साहित्य अथवा पुस्तकें अवश्य दें।

शब्दों का खेल

बच्चों की भाषा में जो शब्द अधिकतर आते हैं, उन शब्दों के वर्ण और स्वरों को ध्यान में रखते हुए 'वर्ण समूह' के आधार पर 'शब्दों का खेल' की रचना की गई है। उदाहरण के तौर पर, आप देखेंगे कि पहली इकाई में कहानियों के माध्यम से बच्चों को 'दादा', 'दादी', 'नाना', 'नानी', 'मामा', 'मामी', 'पिता', 'भाई', 'माँ' शब्दों के प्रिंट रूप से परिचित कराया गया है। फिर 'शब्दों का खेल' में परिवार के सदस्यों के नामों के साथ कार्य दिए गए हैं, जैसे इस कहानी में दिवाकर, दादाजी और दादीजी हैं। आँखें बंद करके इन शब्दों को बोलिए। इनकी पहली ध्वनि बताइए। फिर 'दादा', 'दादी' शब्द लिखने के लिए कहा गया है। इसी तरह से 'मीना', 'नाना', 'मामी' आदि शब्दों पर कार्य करवाया गया है। मीना, नानी, नाना, मामा आदि शब्दों का चुनाव भी इसी उद्देश्य से किया गया है कि शब्दों के खेल के बाद 'मिलकर पढ़ने' का कार्य बच्चे और अधिक आनंद के साथ कर पाएँगे। इसी तरह का

प्रयास अन्य इकाइयों में भी किया गया है। शिक्षकों से अनुरोध है कि वे बच्चों की भाषा के अन्य शब्द भी लें और उनसे ध्वनियाँ पहचानने का कार्य करवाएँ। शब्दों को इमली के बीजों से या कंकड़ या छोटे पत्थरों से भी लिखने का प्रयास करवाया जा सकता है। फिर पेंसिल से लिखने में बच्चों को आसानी होती है। पुस्तक में पहेलियाँ भी दी गई हैं जिससे बच्चे अपने शब्द बना सकें, जैसे— 'दिए गए अक्षरों को जोड़कर अपने शब्द बनाइए' से संबद्ध अभ्यास। 'प्रश्न और पहेली' शीर्षक के अंतर्गत दी गई ये पहेलियाँ देखी जा सकती हैं— 'मेरे पिता के पिता, मेरे .....।', 'मेरे नाम का उल्टा उसका नाम, मैं हूँ नीरा तो वह है .....।', 'नीना की नानी का उल्टा है .....!' इसके अतिरिक्त शिक्षक भी इस तरह की पहेलियाँ बनाकर बच्चों को दें। हो सकता है कि कक्षा 1 के अंत तक बच्चे ही ऐसी पहेलियाँ एक-दूसरे के लिए बनाना सीख जाएँ।

पुस्तक के अंतिम पृष्ठों पर वर्णमाला का गीत दिया गया है। जैसे-जैसे बच्चे कुछ वर्ण सीख लें, उन्हें वर्णमाला से उन वर्णों की पहचान करने के लिए कहिए। इस गतिविधि से वे देख पाएँगे कि वर्णमाला में कितने स्वर और व्यंजन हैं; उन्होंने कितने सीख लिए हैं और कितने सीखने शेष हैं। बच्चों को आनंद के लिए वर्णमाला गीत भी मौखिक तौर पर गाने में मदद कीजिए।

आनंदमयी कविता

बच्चे हाव-भाव के साथ, अभिनय करते हुए कविताओं को गाएँ, जैसा कि हम अपनी कक्षाओं में हमेशा से ही करते आ रहे हैं। कविताओं को चार्ट पेपर पर बड़े अक्षरों में लिख दें। फिर गाते वक्त बच्चे इनको देखकर, शब्दों पर उँगली रखकर भी गा सकते हैं। कविताओं का आनंद लेना मुख्य उद्देश्य है, जैसे इकाई 2 'जीव-जगत' में 'कबरी झबरी बकरी' कविता में शब्दों का चयन और शब्दों का दोहराव बच्चों को कविता गाने का आनंद देता है। पूरी कविता 'बकरी', 'कबरी', 'झबरी' शब्दों के आस-पास घूमती है। इसके साथ-साथ कविताओं पर चर्चा करना, नई कविताएँ गढ़ना, कविताओं में आए शब्दों के साथ कार्य करना आदि अवसर भी दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, 'कबरी झबरी बकरी' कविता में बच्चों से यह कहा गया है कि वे 'झबरा', 'कबरा', 'बकरा' आदि शब्दों से तुकबंदी करते हुए नई कविता की रचना करें। ऐसे अनेक अवसर 'आनंदमयी कविता' का हिस्सा हैं।

चित्रकारी और लेखन

बच्चे चित्रों द्वारा खुद के विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं। इन चित्रों में हमें बच्चों की अवलोकन क्षमता, विचार करने के कौशलों के कई प्रमाण मिलते हैं। इसीलिए लिखना सीखने की प्रक्रिया में चित्रों का महत्वपूर्ण योगदान है। इसीलिए कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों में 'चित्रकारी और लेखन' को सम्मिलित किया गया है, जैसे— 'दिए गए चित्र में आप क्या-क्या देख पा रहे हैं? कुछ नाम लिखिए।' हर गतिविधि संदर्भ आधारित है, उस पर कहानी या कविताएँ बच्चे पढ़ चुके हैं, बातचीत कर चुके हैं। उसके बाद उन्हें चित्रकारी और लेखन का कार्य दिया गया है। बच्चों से आप ऐसे भी किसी कविता या कहानी या अपने मन से चित्र बनाने के लिए कह सकते हैं। जो भी शब्द उन्होंने सीखे हैं, उन्हें लिखने में उनकी मदद कीजिए। उदाहरण के लिए, 'मेला' कविता के अंतर्गत दिया

गया यह अभ्यास— 'मान लीजिए कि आप भी इस मेले में गए हैं। आप वहाँ क्या-क्या करेंगे? अपने मित्रों के साथ बातचीत कीजिए, चित्र बनाइए और कुछ शब्द भी लिखिए।' बच्चों के छोटे समूह में भी यह गतिविधियाँ आप करवा सकते हैं। बच्चे एक-दूसरे से भी बहुत कुछ सीखते हैं।

खोजें-जानें

भाषा शिक्षण को बच्चों के संदर्भ से जोड़ने, संदर्भ से सीखने के अवसर प्रदान करने के लिए इन गतिविधियों को शामिल किया गया है। इनसे बच्चों में अपने समुदाय की समझ बढ़ेगी। अपने घर और आस-पड़ोस का भी वे महत्व समझेंगे। उदाहरण के लिए, परिवार के सदस्य के साथ आस-पास घूमना और छोटे-छोटे कीड़ों-मकोड़ों, जानवरों को देखना। वे क्या करते हैं; क्या खाते हैं; उनके रंग-रूप को देखना आदि। अपने आस-पास मिलने वाले पेड़-पौधों के नाम जानना और चित्र बनाना।

आओ कुछ बनाएँ

इन गतिविधियों का उद्देश्य है कि बच्चे जटिल कार्य के लिए मौखिक निर्देशों को समझें और उसी कार्य के लिए दूसरों को भी स्पष्ट मौखिक निर्देश दे सकें। इस कार्य में कला और भाषा के एकीकरण का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, 'अँगूठे की छाप से चित्र बनाना', 'कागज़ से कुत्ते का मुखौटा बनाना', 'तोरण बनाना' आदि।

खेल-खेल में

यहाँ पर खेल गीत गाना, खेलना, अभिनय करना आदि सम्मिलित किए गए हैं। खेल-खेल में निर्भीक अभिव्यक्ति कर पाने के अवसर देने से बच्चों की झिझक खत्म होती है, वे स्वयं के अनुभव को खुशी-खुशी सबके साथ साझा करने लगते हैं। शायद सीखने-सिखाने में यह सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है। उदाहरण के लिए, साथियों के साथ कविता में दिए खेल खेलना और चित्र बनाकर परिवार के लोगों को बताना, मिट्टी से खिलौने बनाना आदि।

इस पुस्तक में 'झटपट कहिए', 'आओ बूझें पहेली' आदि जैसी कुछ अन्य रोचक गतिविधियाँ भी दी गईं हैं, उदाहरण के लिए, 'घर-घर, घड़ी-घड़ी घड़ी घूमती!'/'भालू को आलू भाया, भाया भालू को आलू'। शिक्षक अपने स्तर पर भी इस प्रकार की कुछ और सामग्री खोजें, स्वयं तैयार करें और उपयोग में लाएँ। इन सबके साथ-साथ एक सतत चलने वाला आवश्यक काम यह है कि पाठ्यपुस्तक की हर इकाई पर कार्य करते हुए शिक्षक स्वयं और बच्चों की सहायता से कुछ-न-कुछ सीखने-सिखाने की सामग्री (टी.एल.एम.) बनाते रहें और उन्हें कक्षा की दीवार पर लगाएँ या अन्य उपयुक्त तरीके से बच्चों के लिए उपलब्ध रखें और उनका उपयोग भी शिक्षण प्रक्रिया में करें। हर इकाई में नई सामग्री की आवश्यकता होगी। उपलब्ध सामग्री में निश्चित रूप से कुछ पुस्तकें भी होनी चाहिए और नियमित रूप से बच्चे पुस्तकों के साथ काम करें, समय-सारणी में इसकी जगह हो।

हमें पूरा विश्वास है कि हमारे शिक्षक इस पाठ्यपुस्तक की सामग्री का रचनात्मक उपयोग इसमें दिए उद्देश्यों और निर्देशों को ध्यान में रखते हुए करेंगे जिससे शिक्षण प्रभावी होगा और बच्चे आनंद के साथ भाषा सीखेंगे।